श्री दशम ग्रंथ साहिब जी का रस सिद्धांत और फिल्मों में शब्दों का प्रयोग

हरप्रीत सिंह
शोधार्थी संगीत विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

श्री दशम ग्रंथ साहिब जी की संपूर्ण वाणी में अनेकों रसों का प्रदर्शन हमें मिलता है। अधिकतर युद्धों का प्रसंग होने के कारण हमें वीर रस की अधिक सामग्री मिलती है। गुरु साहिब जी ने अनेकों अलग–अलग छंदो के अर्न्तगत वीर रसी वाणी उच्चारण की है और अनेकों भाषाओं में जैसे–पंजाबी, हिन्दी, ब्रिज, फारसी, संस्कृत आदि। पर अलग–अलग भाषाएं होने पर गुरु साहिब जी ने श्री दशम ग्रंथ साहिब जी की लिपी गुरमुखी रखी है। श्री दशम ग्रंथ साहिब जी में यहाँ वीर रस है वहीं श्रिंगार रस, भक्ति रस, करूण रस, भयानक रस, रूद्ररस, अद्भुत रस आदि भी मिलते हैं। वीर रस मे आप जी की विशेष रचना है। जो पंजाबी भाषा में रचित है। 'चण्डी दी वार' जिसमें दुर्गा और असुरों के बीच युद्ध के प्रसंगों को प्रदर्शित किया है कि किस तरह दुर्गा और चण्डी ने असुरों का संघार किया साथ ही असुरों की वीरता को भी दर्शाया गया है। उसमें कुछ उदाहरण इस प्रकार है–

'दुर्गा बैण सुणदी हसी हड़हड़ाए।।
ओही सीह मंगाया राखस भखणा।।
चिंता करहो न काई देवां नु आख्या।
रोह होई महा माई राक्षस मारणे।।'
दोहां कंधारा मोह जुड़े ढोल शंख नगारे बजे।।
राक्षस आए रोहले तरवारी बख्तर सज्जे।।
जुटे सौहे युद्ध नूं इक जात न जाणन भजे।।
खेत अंदर जोधे गज्जे।।
कड़क उठी रण चण्डी फौजां देख कै।।
धूहे मियानों खंण्डा होई साहमणे।।

सभे वीर संघारे धूमरनैण दे।।
जण लै कटे आरे दरख्त बाडियाँ।।

ऐसे ही 'नेहकलंक अवतार' में भी अनेकों ही पंक्तियाँ वीर रस का प्रदर्शन करती है जैसे–

सिरखण्डी छंद।।
'बजे नाद सुरंगी धघा घोरियां।।
नचे जाण फिरंगी बजे घुघंरू।।
गदा त्रिशूल निखंगी झूलन बैरखां।।
सावण जाण उमंगी घटा डरावनी।।'
'बागड़द बाजे नागड़दं नगारे।।
जागड़दं जोधा मागड़दं मारे।।
डागड़दं डिगे खागड़द खूनी।।
चागड़दं चौपे दागड़दं दूनी।।'

ऐसे अनेकों ही पंक्तियाँ हैं जो वीर रस का वर्णन करती हैं। इसलिए श्री दशम ग्रंथ साहिब जी की पवित्र रचना रस सिद्धांत से भरपूर है। आज के समय में अनेकों फिल्मों में भी श्री दशम ग्रंथ साहिब जी की वाणी के शब्दों को गया गया है। जैसे– 'एक पुरानी फिल्म है' 'नानक नाम जहाज है' उसमें आशा भौंसले जी ने कई शब्दों को गया है। यह फिल्म 1981 में रिलीज हुई।

'राग रामकली पातशाही १०।।
रे मन ऐसो कर सन्यासा।।
बन से सदन सबै कर समझहो मन ही माह उदासा।।'
राग सौरठ पातशाही १०।।
प्रभ जू तो कह लाज हमारी।।
नीलकंठ नरहर नारायण नील बसन बनवारी।।'
ऐसे ही इसी फिल्म में मुहम्मद रफी जी ने भी शब्द गायन किया है।
'ख्याल पातशाही १०।।
मित्र प्यारे नू हाल मुरीदां दा कहणा।।
तुद बिन रोग रजाइयां दो ओढण नाग निवासां दे रहणा।।
सूल सुराही खंजर प्याला विंग कसाइयां दा सहणा।।
यारड़े दा सानु सत्थर चंगा भठ खेड़ेयां दा रहणा।।'

इसी फिल्म में मुहम्मद कपूर ने भी एक शब्द गाया है।।

'देह शिवा वर मोहे ऐहै शुभ करमन ते कबहूं न टरों।।'
न डरों अर सो जब जाय लरों निश्चय कर अपनी जीत करों।।
अर सिख हों अपने ही मन को एक लालच हयो गुन तयो उचरो।।
जब आब की ओध निदान बनै अत ही रन मै तब झूझ मरो।।'

इस प्रकार और भी कई फिल्में है। जिनमें यह शब्द गाए गए हैं। कहने का तात्पर्य है कि श्री राम दशम ग्रंथ साहिब जी की वाणी को हर सिक्ख संसार का कोई भी मनुष्य हो हर कोई बहुत प्रेम और श्रद्धा से सुनता और गाता है।